

बौद्ध दर्शन के अनुसार आर्यसत्य जीवन के चक्रवर्त्य और दुःख से मुक्ति पाने का मार्ग बताते हैं।

बुद्ध के अनुसार Four Noble Truths निम्न लिखित हैं।

- (i) दुःख (दुःखं अरियसच्चं)
- (ii) दुःख समुदाय (दुःखसमुदायं अरियसच्चं)
- (iii) दुःख निरोध (दुःखनिरोधं अरियसच्चं)
- (iv) दुःख निरोध गामिनि प्रतिपदा (दुःखनिरोधगामिनि प्रतिपदा अरियसच्चं)

हम अब एक-एक कर बुद्ध के Four Noble Truths के बारे में विस्तृत रूप से व्याख्या करेंगे:-

(i) दुःख :- जीवन में दुःख (शारीरिक और मानसिक पीड़ा, असंतोष, अनिष्टता) अंतर्निहित है जन्म बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु सभी दुःख का रूप हैं।

(ii) दुःख समुदाय :- दुःख का एक कारण होता है यह मुख्य रूप से तृष्णा, लालसा या अज्ञान और आसक्ति के कारण उत्पन्न होता है।

(iii) दुःख निरोध :- दुःख का अंत या निवारण संभव है। तृष्णा या इच्छाओं का पूरी तरह समाप्त करके निर्माणा (शान्ति) प्राप्त किया जा सकता है।

- (iv) दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा :-  
दुःखों के अंत तक पहुँचने का मार्ग है  
इसे आर्य अष्टांगिक मार्ग कहा गया है, जो  
संतुलन और मध्यम मार्ग का अनुसरण  
करता है।  
चार आर्य सत्य ऐसे बुनियादी तथ्य हैं जो  
हमारे जीवन की समस्याओं पर विजय पाने  
के मार्ग की रूपरेखा को प्रस्तुत करते हैं।  
बुद्ध की यह पहली शिक्षा है जो बाकी  
सभी बौद्ध शिक्षाओं की संरचना का आधार है।